Table of Contents

1. [illegible]
2. [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 18 [illegible] 1925 [illegible] [illegible] ([illegible] [illegible], [illegible] [illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]-[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]



□□□□□ □□□□□

- हिंदी कथा साहित्य में उनकी विशिष्ट पहचान।
- संयमित और प्रभावशाली लेखन शैली।
- कालजयी चरित्रों का सृजन जैसे मित्रो, शाहनी, हशमत।
- भाषिक विविधता: संस्कृतनिष्ठ तत्समता, उर्दू का बाँकपन, पंजाबी की ज़िंदादिली।
- भारत-पाकिस्तान के संदर्भ में उनकी रचनाएँ महत्वपूर्ण।

पाठ्य प्रमाण

"हिंदी कथा साहित्य में कृष्णा सोबती की विशिष्ट पहचान है। वे मानती हैं कि कम लिखना विशिष्ट लिखना है।"

अभ्यास प्रश्न

- कृष्णा सोबती की प्रमुख रचनाएँ कौन-कौन सी हैं?
- उनकी लेखन शैली की विशेषताएँ क्या हैं?
- कृष्णा सोबती ने हिंदी साहित्य को कौन-कौन से यादगार चरित्र दिए हैं?

उत्तर कुंजी

- प्रमुख रचनाएँ: ज़िंदगीनामा, दिलोदानिश, ऐ लड़की, समय सरगम, हम-हशमत आदि।
- लेखन शैली: संयमित, साफ़-सुथरी, भाषिक विविधता।
- यादगार चरित्र: मित्रो, शाहनी, हशमत।

Prepzy

शब्दावली

- संयमित: नियंत्रित, सीमित
- कालजयी: काल के पार स्थायी
- तत्समता: संस्कृत के समान
- बाँकपन: नज़ाकत, शिष्टता
- ज़िंदादिली: जीवन्तता, उत्साह

मियाँ नसीरुद्दीन का शब्दचित्र

मियाँ नसीरुद्दीन, कृष्णा सोबती के संग्रह "हम-हशमत" से लिया गया एक चरित्र है। वे खानदानी नानबाई हैं जो रोटी बनाने की कला में माहिर
कला का दर्जा देते हैं और अपने हुनर को सीखने की महत्ता बताते हैं। उनकी बातचीत से पता चलता है कि उन्होंने यह कला अपने वालिद उस्ताद
तालीम की महत्ता और मेहनत की बात करते हैं।



मुख्य बिंदु

- खानदानी नानबाई मियाँ नसीरुद्दीन का परिचय।
- रोटी बनाने की कला और पेशे के प्रति उनका दृष्टिकोण।
- शिक्षा और मेहनत की महत्ता।
- परिवारिक परंपरा और हुनर का हस्तांतरण।
- उनके द्वारा बनाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की रोटियाँ।

पाठ्य प्रमाण

"मियाँ मशहूर हैं छप्पन किस्म की रोटियाँ बनाने के लिए।"

"काम करने से आता है, नसीहतों से नहीं।"

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?

[illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]